* औचित्य के भेद *

काव्य के उचित रूप में प्रभावशालि होने के लिए उसके विविध तत्वों में औचित्य का समावेश होना आवश्यक है। आ. भरत से लेकर आ. आनंदवर्धन तक ने अपने काव्य-शास्त्रीय विचारों में औचित्य की व्यापक चर्चा की है। किंतु उसको व्यवस्थित रूप देने का श्रेय आ. क्षेमेंद्र को जाता है। आ. क्षेमेंद्र ने काव्य के सुक्ष्म, अति सुक्ष्म अवयव से लेकर उसके विशालतम रूप को ध्यान में रखते हुए औचित्य के २७ भेद किए है। आ. क्षेमेंद्र के अनुसार —

" पदे, वाक्ये प्रबन्धार्थे गुणेऽलंकरणे रसे।
क्रियायां कारके लिंग - वचने च विशेषणे ॥
उपसर्गे निपाते च काले देशे कुले व्रते।
तत्वे सत्वेऽप्यभिप्राये स्वभावे सारसंग्रहे ॥
प्रतिभायामवस्थायां विचारे नाम्न्याथाऽशिषि।
काव्यास्यांगेषु च प्राहुरौचित्यं व्यापि जीवितम्॥

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट है की, औचित्य की व्याप्ती पद से लेकर प्रबंध और विचारतक हो सकती है। उन्होंने पद, वाक्य, प्रबन्ध, गुण, अलंकार, रस, क्रिया, कारक, लिंग, वचन, विशेषण, उपसर्ग, निपात,

काल, देश, कुल, व्रत, तत्व, सत्व, अभिप्राय, स्वभाव, सारसंग्रह, प्रतिभा, अवस्था, विचार, नाम, आशीष आदि भेदों के रूप में औचित्य का संयोजन किया है। डॉ. गणपतीचंद्र गुप्त इन भेदों को सुगमता की दृष्टी से चार भागों में विभाजित करते है -

१) शब्द (भाषागत तत्व) :
पद, वाक्य, क्रिया, कारक, लिंग, वचन, विशेषण, उपसर्ग, निपात

२) काव्यशास्त्रीय तत्व :
प्रबंध, गुण, अलंकार, रस, सार - संग्रह, तत्व, आशीष...

३) चरित्रसंबंधी तत्व :
व्रत, सत्व, अभिप्राय, स्वभाव, प्रतिभा, विचार, नाम...

४) परिस्थितीसंबंधी तत्व :
काल, देश, कुल, अवस्था...

Scanned with CamScanner

क्षेमेंद्रद्वारा औचित्य के किए गए २७ भेद विशेष रूप से संस्कृत काव्य में सार्थक थे। किंतु हिंदी काव्य की आज की दृष्टि से औचित्य को हम निम्नांकित भेदों के आधार पर ही देख सकते है -

१) पद औचित्य
२) वाक्यगत औचित्य
३) प्रबंधगत औचित्य
४) अलंकारगत
५) रस औचित्य
६) क्रिया औचित्य
७) विशेषण औचित्य
८) देशकाल औचित्य
९) नाम औचित्य
१०) बिंब औचित्य
११) प्रसंग औचित्य
१२) विचार औचित्य

1 पद औचित्य :

जहाँ किसी पद के प्रयोग में विशेष औचित्य प्रकट होता है उसे पद औचित्य कहा जाता है। यहाँ प्रसंग के अनुकूल पद का प्रयोग किया जाता है।

जैसे: अबला जीवन हाय! तुम्हारी
यही कहानी,
आँचल में दूध और
आँखों में पानी।

Scanned with CamScanner

इस काव्यपंक्ति में स्त्री के लिए अनेक शब्द होने के बावजूद भी (भार्या, सजनी, कामिनी, तनवी) स्त्री की दुर्बलता और विवशता को प्रकट करने के लिए मैथिलीशरण गुप्त 'अबला' इस पद का प्रयोग किया है।

[2] "तनवी श्यामा विरह विधुरा
पक्व बिंबा धरोष्ठि।"

इस पंक्ति में कालिदास ने विरहनी यक्षिणी के लिए विरह की अभिव्यक्ति की दृष्टि से 'तनवी' यह पद का प्रयोग किया है।

[3] अवधिशिला का उर पर था गुरुभार
तिल-तिल काँट रही थी दृग जलधार

यहाँ पर अवधिशिला, गुरुभार, तिल-तिल इन पदों में अर्थ की चमत्कृति है। 'धार' पद के प्रयोग में तो विशेष औचित्य है। क्योंकि काँटने के लिए पैनी धार का अर्थ इससे प्रतित होता है।

Scanned with CamScanner

2. वाक्यगत औचित्य :

जहाँ किसी काव्य में वाक्य के प्रयोग का विशेष चमत्कार होता है वहाँ वाक्यगत औचित्य होता है।

जैसे: " फागु की भी अभीरण में
गहि गोविंद लै गयी भीतर गोरी
भाई करी मन की पद्माकर
ऊपर नाई अबीर की झोरी
छीनि पीताम्बर कम्मर ते सु बिदा दई
मीड़ि कपोलन रोरी
नैन नचाइ कही मुसकाइ
लला फिरि आइयो खेलन होरी।"

इसमें अंतिम वाक्य विशेष औचित्य का है। जिसमें यह अभिप्रेत है की, अब होली खेलने का नाम न ले। यह उदाहरण प्रबंधगत औचित्य के लिए भी महत्वपुर्ण माना जाएगा।

(2) " छीमियाँ - दाना - रहित - सा साल
पिछला दुबक गुजरा,
और सूखे सजोर सा,
यह नया आया है पास।
फट गया हो तना जिसका
वह सजीली टोकरी है
छुटती भी नहीं तीखी मिर्च - सी
यह नौकरी।"

Scanned with CamScanner

3 प्रबंधगत औचित्य :

जहाँ किसी कथा प्रबंध के बाँधने के कारण विशिष्ट चमत्कार उत्पन्न होता है उसे प्रबंधगत औचित्य कहा जाता है।

1 "आदमी - अँधेरा
दोनों ही साथ - साथ जनमे
कितनी ही बातें दोनों के मन में
किंतु उन्हें कौन जान पाता ?
आदमी अँधेरे का बड़ा अजब
नाता !
रोशनी में आदमी को
झिझक बड़ी होती
सोचता है क्या पहने
पैंट या धोती ?
रोशनी में सँभल-सँभल चलो
बात नहीं बनती
लाज - शरम , विधि - निषेध
शिरा - शिरा तनती ।"

यहाँ पर आदमी का इस जीवन में अँधेरे से अधिक गहरा नाता है जो इस बात को सिद्ध करने के लिए यह प्रबंध बाँधा गया है।

[2] प्रात धूप की जरतारी ओढ़नी लपेटे
अभी - अभी जागी
खुमार से भरी
नितांत कुमारी घाटी
इस कामातुर मेघ धूम के
औचक अलिंगन में पिसकर
रति श्रान्ता - सी मलिन हो गई।"

यहाँ इन काव्यपंक्तियों द्वारा प्रातः काल के घाटी का दृश्य मानवीकरण के रूप में किया है।

[4] अलंकार औचित्य :-

जहाँ अलंकारों के द्वारा कोई वस्तु भाव या विचार विशेष से प्रभावशील हो उठता है। वहाँ अलंकार औचित्य होता है। अलंकार भाषाई सौंदर्य की वृद्धि करता है। साहित्य में अलंकारों का प्रयोग हो किंतु स्वाभाविक और औचित्य की मात्रा के रूप में। अर्थ और रस के पोषण में अलंकार महत्वपुर्ण भूमिका निभाता है।

जैसे: [1] वत्सल छाती - सी पहाड़िया
दूध पिलाने आतुर।
बच्चे - सा सूरज सो जाता
लेकर मुँह में आँचरा

Page No.
Date: / /

इन काव्य पंक्तियों में अलंकारों के माध्यम से संध्या का वर्णन व्यक्त हुआ है।

2 "स्नेह निर्झर बह गया
रेत ज्यों तन-सा रह गया।"
यहाँ शरीर के लिए 'रेत' के उपमा के माध्यम से अलंकार औचित्य की अभिव्यक्ति होती हुई दिखाई देती है।

3 "मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोय
जाँ तन की झाँई परत श्याम हरित दुति होई

4 "साँझ की सेंदुर लिये आकाश में,
सरक आया क्षुधित बादल व्याल,
लपलपाती दीर्घ विद्युत जीभ उसकी,
तुहिन शिखरों पर विसुध सोयी हुई,
स्वप्न डूबी हर किरन को
चार जाना चाहती है।"

5 रसगत औचित्य :-

जहाँ किसी रस के प्रयोग से काव्य की पंक्तियाँ विशेष रूप से प्रभावित हो जाती हैं वहाँ रसगत औचित्य होता है।

जैसे:

1 "ये फूल सेज के चरणों पर
धर देने दो
मुझको आँचल हर सिंगार भर
लेने दो
मिटने दो आँखों के आगे का
अँधियारा
पथ पर पूरा-पूरा प्रकाश तो लेने दो
यह ठंडी-ठंडी रात उनींदा-सा आलम
मैं नींद भरी-सी चले जहाँ जाना बालम"
— श्रृंगार रस

2 दाने-दाने को तरस गयीं
अगणित आँखें
दो बूँद दूध के लिये ललक
हिचकी लेकर हो गए मौन
माताओं की छाती विदीर्ण,
अवरुद्ध कंठ रह गयी कलख
बबरसे बिखर गये
कितनी साधों के धन
कृमि-कीट सदृश
फुटपाथों पर
मनु की प्यारी संतान
मिट गयी बिलख-बिलख — करुण रस

6 क्रियागत औचित्य :- जहाँ क्रियापदों के प्रयोग से काव्य में विशेष प्रभाव आ जाता है वहाँ क्रिया औचित्य होता है। व्याकरण से संबंधित क्रिया काव्य सौंदर्य की वृद्धि में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है।

जैसे:

1 "बता सखी अब क्या करूं ?
रूपी रात से रार,
भय खाऊँ, आँसू पिऊँ,
मन मारूँ, झख मार।"

2 "कहत, नटत, रिझत, खिजत, मिलत,
खिलत, लजियात
भरे भौन में करत है,
नैनहु ही सों बात।"

3 "अंबर से बरस रहे रिमझिम,
मन हरन निमंत्रण, आलिंगन,
मीठी मनुहारे, विष चुंबन
कुँजों में छिप-छिप छेड़ रहा
दोशीज़ा कलियों का फागुण।"

आरती कुमारी

Page No.
Date: / /

7 विशेषणगत औचित्य :—

जहाँ विशेषण पदों के प्रयोग से काव्य पंक्तियों में विशेष अलंकार उद्भासित होता है वहाँ विशेषणगत औचित्य माना गया है। आधुनिक क्रियाओं में इसका विशेष प्रयोग किया जाता है।

जैसे:

1 "दुल्हन - सा सजा हुआ ड्राईंग रूम।"

2 "सीने में बीती यादों का दर्द ले—
मैफिल के सूने फर्श सा
मैं पड़ा हूँ,
लहराती गाती टहनियाँ,
चहचहाते बसेरे,
महकते फूलों को साथ ले
आँधी तो चली गयी
धरा पर असहाय ठूँठ - सा
मैं पड़ा हूँ।"

3 "शीतल ज्वाला जलती है,
इंधन होता दृग जल का
यह तप्त साँस चल - चलकर
करती है काम अनल का।"

Date 17/3/16

[4] देशकालगत औचित्य : जहाँ देश और काल के वर्णन से विषय में विशेष चमत्कार आ जाता है वहाँ देशकालगत औचित्य होता है।

जैसे: [1] काले जंगल काले खेत, काली मिट्टी साँवरी।
धूप फूल- दोनों ले आतीं, रातें ओढ़े कामरी।
सूरजमुखी हुआ दिन छूकर, मिट्टी लाल पठार की
साँझ पहिनती दिन डूबे, फरिया सपनों के तार की।
ऊपर धरती की छाती पर, फूल चूनर की लालिमा
बीज कोख में रखनेवाली, नीचे रसमय कालिमा।
लुगड़ा छापेदार लाल, हँसली की चमके बीजरी
लहँगा स्याह कमर में पहिने, श्याम बरन की गूजरी ॥

[2] स्वर्णांचला अहा! खेतों में उतरी संध्या श्याम परी
रोमन्थन करती गायें आ रहीं रौंदती घास हरी।
घर-घर से उठ रहा धुआँ, जलते चूल्हे बारी-बारी
चौपालों में कृषक बैठ गाते 'कहँ अटके बनवारी'
पनघट से आ रही पीतवसना युवती सुकुमार,
किसी भाँति ढोती गागर- यौवन का दुर्वह भार।

[3] गहकि गाँसु औरे गहे, रहे अधकहे बैन।
देखि खिसौहैं पिय-नयन, किये रिसौहैं नैन ॥
— बिहारी

Date: / /

यहाँ नायक के नेत्रों में लज्जा का भाव पहचानकर (असली बात है अर्थात अन्य स्त्री के साथ विहार समझकर) समयानुरूप नायिका के शोभनमुख (क्रोधित और रुदन) नेत्र का वर्णन काल औचित्य को अभिव्यक्त करता है।

[9] बिम्बगत औचित्य :

जहाँ बिम्बों के संयोजन से उनके औचित्य द्वारा काव्य में विशेष चमत्कार आ जाता है वहाँ बिम्ब औचित्य माना जाता है।

जैसे: (1) प्रथम रश्मी का आना संगिनी
→ काल औचित्य
तुने कैसे पहचाना?
कहाँ कहो ये बाल विहगिनी
पाया तुने यह गाना?

(2) दूध से भीगे अभी तक चाँदनी के गात, (रेशो / मखमल कुमकुम)
देह से चिपका बरफ-सा श्वेत शीत दुकूल,
नखत-वेणी में रहे उलझे जुही के फूल,
बहाये कुछ लहरियों के साथ दूर अकूल (अत्यधिक / छिपा हुआ / नहीं तो)
और यह शशि भेंट कमला ने किया जल-जात
क्षीर सागर में नहाकर लौट आयी रात।

मेघमय आसमान से उतर रही
संध्या सुंदरी
परी सी
धीरे-धीरे-धीरे

Date: / /

10 नाम औचित्य : जहाँ किसी विशिष्ट नाम के कारण अर्थ की विशेष व्यंजना होती हो वहाँ नाम औचित्य होता है।

जैसे:

① अमराई में दमयन्ती-सी
पीली पूनम काँप रही है।

② द्रौपदी-सी चीखती हैं नारियाँ निर्वस्त्र
जिनके चीर दुःशासन कहीं पर
फेंक आया खींचकर।

③ आदम का पुत्र बहुत भटका अँधेरों
चंगेजी न्यायों के खून भरे घेरों में।

11 क्रियागत औचित्य : जहाँ किसी विचार के कारण काव्य में विशेष चमत्कार आता है वहाँ विचारगत औचित्य होता है।

जैसे:

① "आज मुझे लगता संसार खुशी में डूबा
माँ ने पाया अपना धन ज्यों
बहुत दिनों का खोया
बहुत बड़ी कुँवारी लड़की को

Scanned with CamScanner

Page No.
Date: / /

सुघर मिला हो दूल्हा
मैल भरी दीवारों पर रागों ने
फेरा चूना
किसी भिखारिन के घर में
बहुत दिनों पीछे, मन्द जला हो चूल्हा।

12 प्रसंगगत औचित्य :-

जहाँ किसी प्रसंग के संयोजन से अर्थ में चमत्कार आता है वहाँ प्रसंगगत औचित्य होता है।

जैसे:

① "लगता आज भी यह तेज चिनगारी
गिरी थी ज्यों उदास अशोक वन में
मुद्रिका प्यारी।"

② "क्या सुदामा के स्मरण से
कृष्ण की भी बात तुमको याद आई है?
और यदि हाँ,
तो भला फिर आज भी क्या
रुक्मिणी काँपी नहीं।"

Scanned with CamScanner